बालिका शिक्षा के प्रति मुस्लिम महिला अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन

(जयपुर जिले के विशेष संदर्भ में)

डॉक्टर ऑफ फिलोसफी (शिक्षा) की

उपाधि हेतु प्रस्तुत

संक्षिप्त शोध–प्रारूप

पर्यवेक्षक : शोधकर्त्ता :

डॉ0 अनीता उपाध्याय लता शर्मा

(ऐसोसिएट प्रोफेसर)

शिक्षा एवं शारीरिक शिक्षा विभाग

श्याम विश्वविद्यालय,

लालसोट, दौसा, राजस्थान

2019

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
1	परिचय	1–4
2	साहित्य का पुनरावलोकन	4–6
3	शोध की परिकल्पना	7–8
4	शोध का क्षेत्र	8–10
5	शोध प्ररचना	10
6	निर्देशन पद्धति एवं न्यादर्श चयन	10–11
7	अध्यायीकरण	11
8	संदर्भ ग्रंथ सूची	12–13

बालिका शिक्षा के प्रति मुस्लिम महिला अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन

(जयपुर जिले के विशेष सन्दर्भ में)

परिचय :

किसी भी राष्ट्र के विकास में उस क्षेत्र में निवास कर रहे मानव संसाधनों का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है मानव इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि विश्व में युगों में निर्मित होने वाली गौरवशाली सभ्यताओं के विकास का श्रेय मानव को जाता है। इस प्रकार जिस राष्ट्र का मानव संसाधन जितना अधिक शिक्षित व बुद्धिजीवी होगा वह राष्ट्र उतना ही तीव्र गति से विकास करेगा। किसी भी राष्ट्र अथवा क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृति विकास में वहाँ की श्रमशक्ति एवं मानव संसाधन, कार्य के गुणात्मक स्वरूप तथा कार्य में नियमितता का महत्वपूर्ण स्थान है इस प्रकार का समग्र विकास तभी सम्भव है जब उस समाज में पुरूष के साथ महिलायें भी शिक्षित हों, किन्तु यथार्थ वास्तविकता से परे है। पुरातन काल से महिलाओं का शोषण होता आया है। अधिकतर महिलायें परम्परागत सामाजिक व्यवस्था, अशिक्षा, अज्ञान और जागरूकता के अभाव में विकास की मुख्य धारा से दूर रही है विशेषकर मुस्लिम महिलायें, जो अशिक्षा, अज्ञान के अंधकार से अभी भी ग्रसित है। भारतीय समाज में मुस्लिम समुदाय अल्पसंख्यक समुदायों में सबसे प्रमुख है, उसकी कुछ विशिष्ट मान्यतायें है, कुछ विशेषताऐं व समस्याऐं है मुस्लिम समाज के सोचने का ढंग कुछ अलग है, विशेषकर महिलाओं के संदर्भ में। वहाँ पुरूषों के साथ महिलायें शिक्षित नहीं हो सकती अतः सरकार द्वारा संचालित शैक्षिक नियोजन के कोई भी कार्यक्रम तब तक सफल नहीं हो सकते जब तक कि मुस्लिम समुदाय में पुरूषों के साथ महिलायें शिक्षित नहीं हो जाती है। एक शिक्षित माता अपने बालकों को जो संस्कार दे सकती है वह कार्य एक हजार अध्यापक भी करने में असमर्थ है।

सामान्यतः मुस्लिम समाज के प्रति यह धारणा पायी जाती है कि इस मुस्लिम समुदाय का निम्न वर्गीय भाग शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण नहीं रखता वह शिक्षा के प्रति उदासीन रहता है इसका कारण उनकी सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था है जहां तक बालिका शिक्षा का प्रश्न है अभिभावकों का दृष्टिकोण सकीर्ण मानसिकता से बंधा हुआ है। अभिभावकों के बालिका शिक्षा के प्रति अनुदार दृष्टिकोण के कारण ही शैक्षिक उपयोग से वंचित रह जाती है। इन्हीं शैक्षिक अवसरों के उपयोग की असमानता के कारणों का विश्लेषण करने के लिए, उनकी शैक्षिक आकांक्षाओं, समस्याओं को जानने का प्रयास किया गया है। मुस्लिम समाज की बालिका के शिक्षा के प्रति महिला अभिभावकों का क्या दृष्टिकोण है वे छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं का कहां तक महसूस करते हैं तथा यह सभी समस्याऐं मुस्लिम बालिका की आंकाक्षा के स्तर को कहां तक प्रभावित करती है। महात्मा गांधी जी के शब्दों में–''किसी–न–किसी प्रकार पुरूष–युगों से स्त्री पर शासन करता आ रहा है और इसलिए स्त्री में निम्न होने की भावना का विकास हो गया है।'' साथ ही गांधी के विचारों में –''पुरूषों एवं स्त्रियों की शिक्षा में उसी प्रकार का अन्तर किया जाना आवश्यक है जैसा कि स्वयं प्रकृति माता ने उनमें किया है।''[1]डॉ0 एस.एन मुकर्जी के अनुसार–''आज के भारत में बालिकाओं की शिक्षा–बालकों को दी जाने वाली शिक्षा की प्रतिलिपि मात्र है। यर्थाथतः बालिकों के पाठ्यक्रम के अलावा बालिकाओं को अन्य किसी बात की शिक्षा देने की विशेष व्यवस्था नहीं है। पिछले दस पन्द्रह वर्षो में नारी स्वतंत्रता की बात बड़े जोर–शोर से उठी है, आज भी यहां–वहां बात होती है, विचार–विमर्श होता है इसमें कोई सन्देह नहीं कि नारी जाति को जो सम्मान मिलना चाहिए वह नहीं मिला, कुछ अंशों में उस पर अत्याचार भी हुए, होली–दिवाली उन पर अमानुषिक घटनाऐं भी घटी पर एक अन्य भारतीय सांस्कृतिक दृष्टि से सोचें तो चिन्तकों का एक ऐसा वर्ग भी है, जो नारी स्वतंत्रता का उनके व्यक्तित्व के पूर्ण एवं सहज विकास का समर्थक होते हुए भी उनकी पूर्ण स्वतंत्रता पर प्रश्नचिन्ह लगा देता है। इन चिन्तकों के अनुसार प्रकृति ने नारी शरीर की रचना ही ऐसी की है कि उन्हें सहारा चाहिए। देश के लिए योजनाऐं बनाने वालों तथा समाज–सुधारकों ने आतुरता के साथ लिंगभेद न्यूनातिन्यून करने के संकल्प के साथ 21वीं शताब्दी में प्रवेश किया। इन सब का परिणाम है कि दो दशक पूर्व और आज के बालिकाओं की स्थिति की तुलना करें तो हमें क्रांतिकारी परिवर्तन दिखाई पड़ेगे।

आज का समाज तेजी से बदल रहा है। आज महिलाओं को पुरूषों के समकक्ष माना जा रहा है। बालिका शिक्षा से आज देश प्रगति की ओर बढ़ रहा है। बाल विवाह, दहेज प्रथा, महिला उत्पीड़न जैसी घटनाओं में कमी और जागरूकता आयी है। बाल विवाह, दहेज प्रथा, महिला उत्पीड़न जैसी घटनाओं में कमी और जागरूकता आयी है। महिलाओं को समाज के अभिन्न अंग के रूप में पूरे विश्व में स्वीकार किया जाने लगा है। अतः हम पूरे विश्व में भी चले जाऐंगें ऐसे परिवर्तन दिख जाऐंगें।

उच्च स्तर पर मुस्लिम बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षाये कौन सी है यह एक अनुसंधान का बिन्दु है जैसे कि मुस्लिम बालिकाओं को उनकी महिला अभिभावक उच्चस्तरीय शिक्षा प्राप्त करने में सहयोग नही करती है वे बालिकाओं का घर का काम सिखाने व सामाजिक परम्पराओं के निर्वहन पर जोर देती है। चुंकि वे स्वयं भी यही अपनी महिला अभिभावकों से सीखती आई है। महिला अभिभावक अपनी बालिकाओं को उच्च शिक्षा प्राप्ति में होने वाली समस्याओं के चलते भी स्कूल/कॉलेज भेजने में असहज महसूस करती है उनको लगता है कि हमारे समाज की बालिकाओं को अनावश्यक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा यदि इसके चलते कोई ऊंच–नीच हो गई तो समाज में शर्मिन्दा होना पड़ेगा। शिक्षा को लेकर मुस्लिम बालिकाओं के प्रति पुरूष अभिभावकों के साथ महिला अभिभावकों का दृष्टिकोण भी पुरूष अभिभावकों से कुछ अलग नही है अभिभावकों का मानना है कि उच्च शिक्षा प्राप्त होने पर बालिकाओं के विवाह में समस्यायें आयेगी व विवाह पश्चात् अपने ससुराल में सही से सामंजस्य स्थापित नही कर पायेंगी। मुस्लिम अभिभावक अपने बालक व बालिकाओं की शिक्षा में भेदभाव करते है उनका मानना है कि बालिकाओं पर शिक्षा का खर्च व्यर्थ है एवं साथ ही उनको शिक्षित करने पर सामाजिक मान्यताओं एवं परम्पराओं का तोड़ने जैसा गुनाह करना ठीक नही है मुस्लिम समाज में अभिभावक बालकों पर शिक्षा के लिए खर्च कर सकते है किन्तु बालिकाओं पर शिक्षा हेतु खर्च करना उचित नही समझते जिसके चलते अधिकतर बालिकायें उच्च शिक्षा से वंचित रह जाती है। सरकार द्वारा बालिकाओं की शिक्षा को लेकर बनायी गई योजनाओं का लाभ लेकर भी वे अपनी बालिकाओं का पढ़ाना नही चाहते है। अशिक्षा के कारण उनको या तो सरकार की योजनाओं की जानकारी नही होती है और यदि हो तो भी वह स्पष्ट नही होने के कारण इसका खामियाजा बालिकाओं को भुगतना पड़ता है। यदि कोई

मुस्लिम अभिभावक अपनी बालिका की शिक्षा को लेकर चिंतित होता है और उसे उच्च शिक्षा दिलाने हेतु प्रतिबद्ध होता है तो भी उन अभिभावकों के मन में यह शंका रहती है कि जिस भी शैक्षिक संस्थान में वह शिक्षा प्राप्त करने जायेगी वहां का वातावरण, अध्यापकों का बालिका के प्रति क्या नज़रिया रहेगा यह चिंता अक्सर मुस्लिम बालिकाओं की शिक्षा में बाधा उत्पन्न करती रही है। शिक्षक, शिक्षा अधिकारी, बुद्धिजीवियों एवं धर्म गुरूओं का उक्त समस्या को लेकर अलग–अलग विचार है। भारत देश में मुस्लिम बालिकाऐं ही नही बल्कि सम्पूर्ण महिला वर्ग की शिक्षा एक कठिन समस्या है। इस समस्या से निपटने के लिए केन्द्र व राज्य सरकार निरन्तर प्रयासरत है भारत एक लोकतान्त्रिक राज्य है और यह तभी सफलतापूर्वक कार्य कर सकता है जब इसमें समाज के सभी सदस्य समान रूप से भागीदारी निभायें।

साहित्य का पुनरावलोकन :

मेरे द्वारा इस विषय ''बालिका शिक्षा में मुस्लिम महिला अभिभावकों का दृष्टिकोण का अध्ययन'' पर किए जाने वाले शोध कार्य से सम्बन्धित शोध प्रारूप का निर्माण करते समय मैनें निम्नलिखित साहित्य का अध्ययन किया है।

पुस्तकें :

- अन्सारी एम.एन – महिला एवं मानवाधिकारी
- अरोड़ा, रीता – शिक्षण एवं अधिगम के मनोसामाजिक आधार
- भटनागर, आर0पी0 – शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व
- ढोढियाल, एस0पाठक – शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र
- गोयल सुनील, गोयल संगीता – भारत में सामाजिक परिवर्तन
- कोठारी, सी0आर0 – अनुसंधान विधिशास्त्र विधियॉ और तकनीकी
- लवानिया, एम.एम. – परिवर्तन एवं विकास का समाजशास्त्र
- पारीक, प्रो0 मथुरेश्वर – उदीयमान भारतीय समाज एवं शिक्षा
- पाठक, पी0डी0 – शिक्षा मनोविज्ञान

- शर्मा, आए0ए0 – शिक्षण–अधिगम का मनोविज्ञान
- सिन्हा, आर0के0 – मुस्लिम विधि
- वुडस माल – वुमैन इन दा चैन्जिंग इस्लामिक सिस्टम

शोध ग्रन्थ :

- बी0ए0 नवी व एम0एल0 लिधू (1996), कश्मीर में अनंतनाग के बारामुला क्षेत्र में मुस्लिम महिलाओं के पुरातनपंथी आधुनिकीकरण के परिप्रेक्ष्य में
- ताहिरा खातून (1996) , अल्पसंख्यक छात्रों का विज्ञान व उसकी उपलब्धि के विषय में दृष्टिकोण के तुलनात्मक अध्ययन
- शबाना शाहीन (1998), मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक शैक्षिक स्तर उंचा होना का प्रभाव का अध्ययन
- नुजहत परवीन (1999), माताओं के शैक्षिक स्तर के आधार पर बच्चों की स्कूली उपलब्धि व आकांक्षा स्तर का अध्ययन
- कुमारी गीता, (2016) मुस्लिम परिवारों में परिवर्तित दृष्टिकोण का अध्ययन,
- नसरीन मुमताज (2017) शोध अध्ययन नगरीय परिवेश में मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा की स्थिति (छत्तीसगढ़ के महासमुन्द जिले के महासमुन्द नगर के विशेष सन्दर्भ में)
- मनीषा पाण्डेय (2020) ''रीवा जिला के मुस्लिम परिवारों में महिलाओं का शैक्षणिक विकासः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

शोध जर्नल्स :

- Buch, M.B. (1974, 1972-1978,1983-1988, 1988-1992,). First, Second, Third, Forth survey of Research in Education. Entre Advanced Studey in Education Faculty of Education and Psychology. M.S. University, Baroda
- Bhartiya Shiksha Shodh Patrika, Indian Institute of Education Research. Indian Institute of Research. Lucknow:-19(2) Jan-June(1984)
- Dissertation Avstracts International:The Humanities and social science volume 57,58 (1997),69,70(2009)

- Higher Educational Research And Development. Vol-19, issue Oct.-1997
- Indian Journal of Educational Research. Vol-20,23,24,28
- Journal of The Indian Academy of Applied Psyschology. January 1998 vol-14
- M.Ed/Ph.D Reported (1960-1982) Jaipur: University of Rajasthan
- Research in Education:In Rajasthan Education Department, Rajasthan, Bikaner
- Sharma, S.K. (1993-98,1998-2003)Fifth, Sixth Survey of Educational Researc. NCERT vol I,II New Delhi

पत्र–पत्रिकाऐं :

- अनुसंधान एवं अध्ययन, शिक्षा विभाग, इलाहबाद विश्वविद्यालय
- भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, भारतीय इंस्टीट्यूट ऑफ रिसर्च लखनउ
- भारतीय आधुनिक शिक्षा, एनसीईआरटी, नई दिल्ली,
- लोकमान्य शिक्षक सुयुक्तांक शिक्षा की पत्रिका
- राजस्थान में शिक्षा अनुसंधान सम्प्राप्तियां सम्भावनाऐं, शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर,
- शिक्षा साहचर्य लोकमान्य तिलक शिक्षक म.वि. उदयपुर बोर्ड पत्रिका

वेबसाईट्स :

- www.coching.com.rr
- www.springerling.com/content/d1223v25rj30m105/contentsofathure?
- www.google.com/ presonality/self_review.pdf
- www.freelibrary.com/jouranalofInstructuctional Psychology Dec.2005
- www.E-mail:murase@m.email.ne.jp
- www.google.com
- www.education.nic.in
- www.shabdkosh.com
- https://books.google.co.in
- http://www.socialresearchfoundation.com

शोध की परिकल्पनाऐं :

मेरे द्वारा इस विषय ''बालिका शिक्षा में मुस्लिम महिला अभिभावकों का दृष्टिकोण का अध्ययन'' पर किया जाने वाला शोध कार्य निम्नलिखित परिकल्पनाओं से प्रेरित है–

1. शोध क्षेत्र में बालिका शिक्षा के प्रति मुस्लिम महिला अभिभावकों का दृष्टिकोण बालिका शिक्षा को प्रभावित करती है।
2. महिला अभिभावकों का बालिका शिक्षा के प्रति सकारात्मकता से बालिका के व्यावहारिक जीवन में सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
3. जयपुर गग्रमीण एवं शहरी मुस्लिम महिला अभिभावकों के बालिका शिक्षा संबंधी दृष्टिकोण में अंतर पाया जाता है।
4. जयपुर गग्रमीण एवं शहरी मुस्लिम अशिक्षित एवं शिक्षित महिला अभिभावकों के बालिका शिक्षा सम्बन्धित दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है।
5. शिक्षित एवं अशिक्षित मुस्लिम महिला अभिभावकों के बालिका शिक्षा संबंधी दृष्टिकोण के अंतर का अध्ययन करना।
6. शिक्षित एवं अशिक्षित मुस्लिम महिला अभिभावकों का बालिकाओं को शिक्षित करने में समाज एवं परिवार में भूमिका का अध्ययन करना।
7. शिक्षित एवं अशिक्षित मुस्लिम महिला अभिभावकों के बालिका शिक्षा में उच्च शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
8. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की मुस्लिम महिला अभिभावकों के बालिका शिक्षा में उच्च शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
9. शिक्षित एवं अशिक्षित मुस्लिम महिलाओं का पिछड़ापन बालिका शिक्षा को प्रभावित करता है।
10. गग्रमीण एवं शहरी क्षेत्र की मुस्लिम महिलाओं का पिछड़ापन बालिका शिक्षा को प्रभावित करता है।
11. शिक्षित एवं अशिक्षित मुस्लिम महिला अभिभावकों का पारिवारिक वातावरण बालिका शिक्षा को प्रभावित करता है।

12. ग्रमीण एवं शहरी मुस्लिम महिला अभिभावकों का पारिवारिक वातावरण बालिका शिक्षा को प्रभावित करता है।
13. ग्रमीण एवं शहरी मुस्लिम महिला अभिभावकों का शिक्षा के प्रति जागरूकता बालिका शिक्षा को प्रभावित करती है।
14. शिक्षित एवं अशिक्षित मुस्लिम महिला अभिभावकों का शिक्षा के प्रति जागरूकता बालिका शिक्षा को प्रभावित करती है।
15. ग्रमीण एवं शहरी मुस्लिम महिला अभिभावकों का बालिकाओं को शिक्षा हेतु बाहरी वातावरण में समायोजित होने में सहायता बालिका शिक्षा को प्रभावित करती है।
16. शिक्षित एवं अशिक्षित मुस्लिम महिला अभिभावकों का बालिकाओं को शिक्षा हेतु बाहरी वातावरण में समायोजित होने में सहायता बालिका शिक्षा को प्रभावित करती है।

शोध अध्ययन का क्षेत्र :

शोध कार्य के लिए जयपुर जिले के सांगानेर तहसील एवं चौमू तहसील क्षेत्र का चयन किया गया है। जिसका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

जयपुर जिले का भौगोलिक परिचय :

जयपुर जिला राजस्थान के पूर्वी भाग में 26०23′ से 27०5′ उत्तरी अक्षांश तथा 74०55′ से 76०50′ पूर्वी देशान्तर रेखाओं के बीच स्थित है।इसके उत्तर में राजस्थान का सीकर जिला व हरियाणा का महेन्द्रगढ़ जिला दक्षिण में टोंक जिला पूर्व में अलवर दौसा और सवाई माधोपुर जिले तथा पश्चिम में नागौर और अजमेर जिले स्थित है। राजस्थान राज्य की राजधानी जयपुर जिले का कुल क्षेत्रफल 11,143 वर्ग किलोमीटर है, जिसका नगरीय क्षेत्रफल 737.59 वर्ग किलोमीटर व ग्रमीण क्षेत्रफल 10,405.41 वर्ग किलोमीअर है, जयपुर जिले में कुल 19 विधानसभा क्षेत्र है। 13 तहसील, 488 पंचायते है अध्ययन क्षेत्र की स्थिति और विस्तार पर गौर करे तो जयपुर जिला राजस्थान के मध्य भाग में स्थित है। जयपुर शहर समुद्र तल से 431 मीटर 1417 फीट की उंचाई पर स्थित है जिसके परिणामस्वरूप साल भर अपेक्षाकृत उच्च तापमान के साथ अर्ध शुष्क जलवायु होती है। तीन ओर से अरावली पर्वत श्रृंखला से घिरा

होने के कारण भी जयपुर का सौन्दर्य रमणीय लगता है जिसके कारण जयपुर पर्यटन स्थल के रूप में भी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है।

जयपुर जिले का ऐतिहासिक परिचय :

आमेर नरेश सवाई जयसिंह ने 18 नवम्बर, 1727 को जय नगर के नाम से जयपुर की स्थापना की। जयपुर का वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य था। राजस्थान एकीकरण के चर्तुथ चरण 30 मार्च 1949 में जयपुर को सम्मिलित किया गया एवं तब से ही जयपुर ही राजस्थान की राजधानी है। सिटी ऑफ आइसलैण्ड, गुलाबी नगर, पिंक सिटी, रंग श्री द्वीप, राजस्थान की राजधानी,पूर्व का पेरिस, हेरीटेज सिटी, वैभव द्वीप, पन्ना नगरी , दूसरा वृंदावन, रत्न नगरी, भारत का पेरिस इत्यादि नामों से जयपुर शहर को जाना व पहचाना जाता है। यदि हम युगान्तर के हिसाब से जयपुर की बात करें तो जयपुर का इतिहास काफी प्राचीन है जयपुर का निर्माण मध्य काल के अंत मे हुआ था किन्तु जयपुर स्थापना करने वाले शासक का वंश कई शताब्दी पूर्व माना जाता है।

ऐसा माना जाता है कि कांचवाड़ा परिवार ग्वालियर से यहां आकर बसे थे जा अपने आप को भगवान श्री राम के पुत्र की संतान मानते थे। इस वंश का संस्थापक दुलहराय (तेजकरण) था, जो 1137 इसवी में बड़गुर्जरों को हराकर नवीन ढूंढाड़ राज्य की स्थापना की। सन 1207 में इसी वंश के कोकीलदेव ने मीणाओं से आमेर पर विजय प्राप्त कर आमेर को अपनी राजधानी बनाया और तब से 17वीं शताब्दी तक आमेर राजधानी रहा। 18वीं शताब्दी के शुरूआत में असी वंश के शासक जयसिंह द्वितीय या सवाई जयसिंह ने जयपुर नगर की स्थापना करके आमेर के स्थान पर जयपुर को राजधानी बनाया और साथ ही इनके द्वारा कई महलों एवं वैद्यशालाओं का निर्माण करवाया गया।

जयपुर जिले के जनांकिकी :

जयपुर शहर नगर निगम द्वारा शासित है और राजस्थान राज्य केन्द्र शासित प्रदेश में स्थित है। जनगणना भारत की अंतिम रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2011 में जयपुर की जनसंख्या 3,047,163 थी जिनमें महिला एवं पुरूष क्रमशः 1,603,125 और 1,443,038 थी। जयपुर की

वर्तमान 2022–23 की जनसंख्या अनुमानित जनसंख्या 7,685,041 है वहीं पुरूषों की अनुमानित जनसंख्या 4,022,774 है तो महिलाओं की जनसंख्या 3,662,267 हैं। शिक्षा के क्षेत्र में जयपुर शहर में कुल साक्षर 2,215,535 है, जिनमें से 1,246,245 पुरूष है जबकि 969,290 महिलाऐं सम्मिलित है। जयपुर शहर की औसत साक्षरता दर 83.33 प्रतिशत है जिसमें पुरूष 76.65 प्रतिशत है तो महिलाओं की साक्षरता दर 89.33 प्रतिशत से पुरूषों से अधिक है।

शोध प्रारचना :

मेरे द्वारा शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए एक शोध प्रारचना का निर्माण किया जायेगा। मेरे शोध विषय की ''**बालिका शिक्षा के प्रति मुस्लिम महिला अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन**'' प्रकृति को देखते हुए शोध कार्य में अन्वेषणात्मक एवं विवरणात्मक शोध के प्रकार का प्रयोग किया जायेगा।

शोध विषय से संबंधित तथ्य–आंकड़े, सूचनाऐं एवं जानकारियां एकत्रित करने के लिए अवलोकन, साक्षात्कार, एवं अनुसूची शोध प्रविधि का उपयोग किया जायेगा।

शोध विषय से संबंधित प्राप्त प्राथमिक तथ्य, जानकारियां एवं सूचनाओं को प्रमाणिक एवं विश्वसनीय बनाने के लिए शोध के द्वितीयक स्त्रोत के रूप में पुस्तकें, शोध ग्रन्थ, सरकारी एवं गैर–सरकारी प्रकाशित एवं अप्रकाशित प्रतिवेदन, विभिन्न एनजीओ की रिपोर्ट प्रतिवेदन, वेबसाइटस् आदि का प्रयोग किया जायेगा।

निदर्शन पद्धति एवं न्यादर्श चयन

शोध अध्ययन के दौरान समग्र में से अर्थात अध्ययन क्षेत्र में से शोध विषय से संबंधित जानकारियां एवं आंकड़ें प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम उद्धेश्यात्मक पद्धति का प्रयोग करके 300 शहरी तथा 300 ग्रामीण महिलाओं का चयन करने के लिए वार्ड सूचियां, कॉलोनी आदि का चयन किया जायेगा।

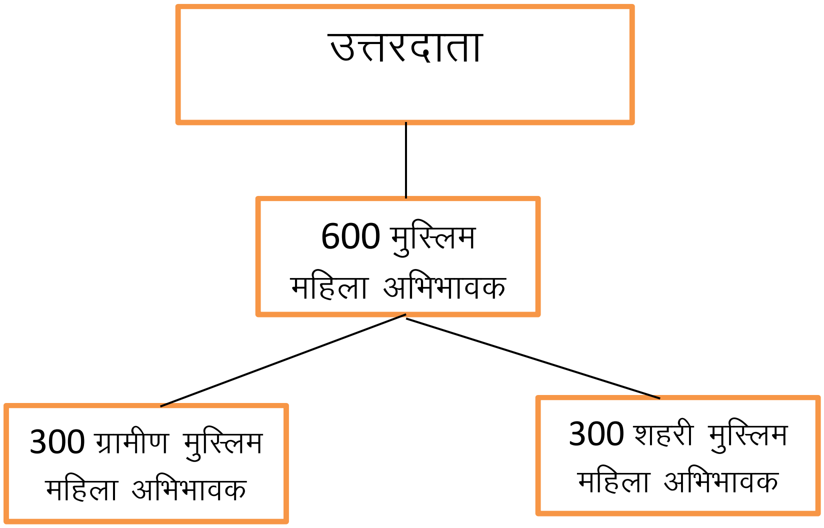

इसके पश्चात् दैव निर्दशन पद्धति द्वारा विभिन्न मुस्लिम महिला अभिभावक उत्तरदाताओं का चयन किया जायेगा जिससे उत्तरदाताओं का चयन करते समय व्यक्तिगत, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, जातिय भेदभाव न हो।

अध्यायीकरण :

मेरे द्वारा सम्पूर्ण शोध कार्य को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने के लिए इसे निम्नलिखित अध्यायों में विभक्त किया जायेगा–:

अध्याय–प्रथम : सम्प्रत्यात्मक पृष्ठभूमि

अध्याय–द्वितीय : साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय–तृतीय : अनुसंधान विधि एवं प्रारूप

अध्याय–चतुर्थ : तथ्यों का प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेषण

अध्याय–पंचम : सांराश, निष्कर्ष एवं सुझाव

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- वुडस माल (1854) वुमैन इन दा चैन्जिंग इस्लामिक सिस्टम
- रेमर्स, रूमेल एवं गेज; (1964) "एन इन्ट्रोडक्शन टू मेजरमेन्ट एण्ड एव्ल्यूशन", एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई,
- रोकच. एम ; (1968)"बिलीफ एटीट्यूडस एण्ड वेल्यूस", जैसी बॉस, सेनफ्रांसिस्को,
- भटनागर, आर0पी0 (1973) शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, द्वितीय संस्करण विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- रमल जे.एम.एन.; (1986), "इन्ट्रोडक्शन टू रिसर्च पोजीशन इन एजुकेशन", हार्पर ब्रदर्स, न्यूयार्क,
- ढोढियाल, एस0पाठक (1990), शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
- शर्मा वीरेन्द्र प्रकाश शर्मा, शोध प्रविधियां
- अन्सारी एम.एन, (2000), महिला एवं मानवाधिकार, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
- तरूण, हरिवंश (2000), ''मानक शिक्षा दर्शन एवं शैक्षिक समाजशास्त्र'', प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, पृ.सं. 13
- गोयल सुनील, गोयल संगीता, (2003) भारत में सामाजिक परिवर्तन, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स एस.एम.एस. हाईवे. जयपुर
- पारीक, प्रो0 मथुरेश्वर, (2005), उदीयमान भारतीय समाज एवं शिक्षा, शिक्षा प्रकाशन जयपुर
- शर्मा, आए0ए0, (2005), शिक्षण–अधिगम का मनोविज्ञान, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ
- अरोड़ा, रीता, (2005), शिक्षण एवं अधिगम के मनोसामाजिक आधार, शिक्षा प्रकाशन, जयपुर
- अग्रवाल, संध्या; (2005) ''शिक्षा मनोविज्ञान'', विजय प्रकाशन मन्दिर, वाराणसी,
- शर्मा, आर.ए.; (2005) ''शिक्षा अनुसंधान'', सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ,

- सिन्हा, आर0के0, (2006), मुस्लिम विधि, सैन्ट्रल लॉ एजेन्सी
- भटनागर ए.बी.,(2006), भटनागर मीनाक्षी; "भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास", आर. लाल बुक डिपो, मेरठ,
- शर्मा आर.ए.; (2007), ''अधिगम एवं विकास के मनोवैज्ञानिक आधार'', आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ,
- पाठक, पी0डी0 (2007), शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिरए आगरा
- कोठारी, सी0आर0 (2008), अनुसंधान विधिशास्त्र विधियॉ और तकनीकी, न्यूरोज इन्टरनेशनल लिमिटेड पब्लिकेशन कारपोरेशन, आगरा
- शर्मा आर.ए.; (2008), ''शिक्षा अनुसंधान'', आर. लाल बुक डिपो, मेरठ
- पाठक, आर.पी. (2008), ''प्राचीन भारतीय शिक्षा'', कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ.सं. 01
- अग्रवाल, भारती (2009), ''सर्व शिक्षा अभियान के तहत टोंक जिले में बालिका शैक्षिक विकास की प्रकृति का अध्ययन'', लघुशोध, वनस्थली, पृ.सं. 11
- लवानिया, एम.एम., (2010) परिवर्तन एवं विकास का समाजशास्त्र, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर
- संजय सिंह, मुस्लिम महिला और शिक्षा, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस प्रा0 लि0, 2011 संस्करण